

SA – I (2016-17)
Subject :- Sanskrit
Class – VI

अष्टमः पाठः - संख्यावाचक-शब्दाः (त्रिषु किङ्गेषु)

- | | |
|---|----------------------------------|
| २० - विंशतिः | ५७ - सप्तचत्वारिंशत् |
| २१ - एकविंशतिः | ५८ - अष्टचत्वारिंशत् |
| २२ - द्वाविंशतिः | ५९ - नवचत्वारिंशत्, एकौनपञ्चाशत् |
| २३ - त्रयोविंशतिः | ५० - पञ्चाशत् |
| २४ - चतुर्विंशतिः | |
| २५ - पञ्चविंशतिः | |
| २६ - षड्विंशतिः | |
| २७ - सप्तविंशतिः | |
| २८ - अष्टविंशतिः | |
| २९ - नवविंशतिः, एकौनत्रिंशत् | |
| ३० - त्रिंशत् | |
| ३१ - एकत्रिंशत् | |
| ३२ - द्वित्रिंशत् | |
| ३३ - त्रयस्त्रिंशत् | |
| ३४ - चतुस्त्रिंशत् | |
| ३५ - पञ्चत्रिंशत् | |
| ३६ - षट्त्रिंशत् | |
| ३७ - सप्तत्रिंशत् | |
| ३८ - अष्टत्रिंशत् | |
| ३९ - एकौनचत्वारिंशत्, नवत्रिंशत् | |
| ४० - चत्वारिंशत् | |
| ४१ - एकचत्वारिंशत् | |
| ४२ - द्विचत्वारिंशत् | |
| ४३ - त्रिचत्वारिंशत्, त्रयश्चत्वारिंशत् | |
| ४४ - चतुश्चत्वारिंशत् | |
| ४५ - पञ्चचत्वारिंशत् | |
| ४६ - षट्चत्वारिंशत् | |

वाक्य रचना -

- (I) कताः - तस्य वृक्षस्य शाखायाम् अनेकाः कताः सन्ति।
- (II) वृक्षाः - अस्मिन् उद्याने अनेके वृक्षाः सन्ति।
- (III) पुष्पाणि - उद्याने अनेकानि पुष्पाणि विकसन्ति।
- (IV) एकः - अस्मिन् आफ्रामे एकः मुनिः वसति।
- (V) द्वे - अस्मिन् वने द्वे फले स्तः।
- (VI) चतस्रः - कक्ष्यायां चतस्रः बालिकाः संस्कृतम् पठन्ति।
- (VII) विशालः - मम उद्याने एकः विशालः वृक्षः अस्ति।
- (VIII) मधुरम् - अस्माकम् व्युम् मधुरम् वचनम् वदति।
- (IX) सखनाः - वने सखनाः वृक्षाः भवन्ति।
- (X) कुर्वतः - तस्य उद्यानस्य वृक्षे द्वौ वनरो कुर्वतः।
- (XI) पठन्ति - आदर्श-विद्यालयस्य छात्राः नित्यम् संस्कृतम् पठन्ति।
- (XII) हरीतिमा - उद्याने हरीतिमा अस्ति।

नवमः पाठः - श्लोकाः

प्रथमा विशक्ति -

अर्थ - मधुरता के अधिपति भगवान् श्री कृष्ण के हाँठ मीठे हैं, उनका मुख मीठा है, उनकी आँख मीठी हैं, उनका हँसना मीठा है, उनका हृदय मीठा है, उनका चलना मीठा है अर्थात् भगवान् श्री कृष्ण का सम्पूर्ण तत्व मीठा है। क्योंकि वे मधुरता के प्रतीक हैं।

द्वितीया विशक्ति -

अर्थ - सूर्य, चन्द्रमा तथा तारों को देखो, वे कभी भी अपने-अपने राति पथों अर्थात् विचरता करने के मार्गों को कभी नहीं भ्रमते हैं।

तृतीया विशक्ति -

अर्थ - चन्द्रमा से रात और रात से चन्द्रमा तथा चन्द्रमा और रात से आकाश सुरोभित होता है। जल से कमल और कमल से जल तथा जल और कमल से ताजा सुरोभित होता है।

चतुर्थी विशक्ति -

अर्थ - दुर्जन व्यक्ति की विद्या विवाद (बहस) के लिए उसका धन धर्म के लिए तथा उसकी शक्ति दूसरों को कष्ट पहुँचाने के लिए होती है, जबकि सज्जन व्यक्ति की विद्या ज्ञान के लिए, उसका धन दान के लिए तथा उसकी शक्ति दूसरों की रक्षा के लिए होती है। इस प्रकार, दुर्जन और सज्जन व्यक्ति की यह प्रकृति परस्पर विपरीत है।

पंचमी विशक्ति -

अर्थ - विद्या विनम्रता प्रदान करती है, विनम्रता से योग्यता प्राप्त होती है, योग्यता से धन प्राप्त होता है, धन से धर्म तथा सुख प्राप्त होता है।

षष्ठी विशक्ति -

अर्थ - हाथ का आभूषण दान करना है, गणों का आभूषण सत्य वचन बोलना तथा कानों का आभूषण धर्म और शास्त्रों की बातें सुनना है इन सबके होते हुए किसी और आभूषण की जरूरत नहीं है।

सप्तमी विशक्ति -

अर्थ - विदेशगमन के समय विद्या ही सबसे बड़ा धन होता है, संकट के समय बुद्धि रूपी धन ही सहायक होता है, परलोक में धर्म ही धन होता है अर्थात् इस लोक में किया गया धर्म परलोक के लिए सर्वाधिक सहायक होता है जबकि सुन्दर आचरण सभी जगह ही धन होता है अर्थात् सुन्दर आचरण का सर्वोपरि महत्व है।

अम्बो धन विशक्ति -

अर्थ - हे सरस्वती ! हे सौभाग्यशालिनी देवी ! आप मुझे बुद्धि, कीर्ति, मति और सफलता दीजिए। हे शारदा देवी ! तुम्हें मैं नमस्कार करता हूँ।

पुश्ननिर्मिणी -

- (I) सूर्यम् पश्य कम् पश्य ?
- (II) केन विश्रान्ति सरः ?
- (III) कस्य भूषणं दानम् ?
- (IV) कथम् । कस्मात् याति पात्रताम् ?
- (V) हे सरस्वती ! महाभागे ! काम् । किम् देहि ?
